अंतिम पत्ता

ओ. हेनरी

लेखक के विषय में

ओ हेनरी का असली नाम विलियम सिडनी पोर्टर था. उनका जन्म 1862 में ग्रीन्सबोरो, नार्थ कैरोलिना, में हुआ था. अठारह वर्ष की आयु में स्कूल छोड़ कर वह एक ड्रग स्टोर में काम करने लगे थे. शीघ्र ही वह टेक्सास आ गये और वहाँ भेड़ों के एक फ़ार्म में करने लगे.

टेक्सास में रहते हुए उन्होंने विवाह किया और एक सुंदर बेटी के पिता बने. अपने परिवार के देखरेख करने हेतु वह एक बैंक में काम करने लगे. लेकिन जब उनके खाते में 1000 डॉलर कम पायेगे तो वह न्यू ओरलेंस भाग गये. फिर उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई और वह पकड़े गये. बैंक का पैसा गबन करने के जुर्म में उन्हें जेल हो गई. जेल में ही उन्होंने अपनी सबसे अच्छी कहानियाँ लिखीं.

इस किताब में छपी कहानियाँ उनके अलग-अलग संग्रहों से चुनी गई है. अपनी हर कहानी को एक अप्रत्याशित मोड़ देने के लिए पोर्टर प्रसिद्ध थे.

पोर्टर के निधन 5 जून 1910 को हुआ था. जीवन के अंतिम दिनों तक वह लिखते रहे थे.

अंतिम पत्ता

न्यू यॉर्क के वाशिंगटन स्क्वायर के पश्चिम में एक छोटा-सा इलाका है जहां पर रास्तों को छोटे-छोटे भागों में बांटा गया है और हर भाग को 'प्लेस' कहा जाता है. इन सारे 'प्लेसेस' को ग्रीनविच विलेज कहा जाता है.

वर्षों पहले कई कलाकार यहाँ रहने आये थे. वह लोग कम किराये के घरों की या उन घरों की तलाश में थे जिनमें उत्तर दिशा में खिड़कियाँ थीं. वह जगह कलाकारों की बस्ती सी बन गयी थी.

जोह्न्सी

मिस्टर बेह्मन

सू

ईंट के बने एक तीन-मंज़िला इमारत की ऊपरी मंजिल में जोहन्सी और सू का स्टूडियो था. 'जोहन्सी' जोहन्ना का उपनाम था.

दोनों में से एक लड़की मेन की थी, दूसरी कैलिफ़ोर्निया की. लेकिन जब उनकी मुलाकात हुई तो उन्हें पता चला कि, चाहे कला हो या सलाद, उनकी रुचि एक जैसी ही थी. उन्होंने एक साथ रहने का निर्णय ले लिया.

मुझे इस कमरे का आकार अच्छा लगा.

हाँ, और यहाँ प्रकाश भी पर्याप्त है.

यह मई की बात थी जब मौसम सुहावना था और सब प्रसन्नचित्त थे. लेकिन नवम्बर के आते ही, निमोनिया एक सर्द अजनबी की तरह आया और अपनी ठंडी उँगलियों से यहाँ-वहां लोगों को छूने लगा.

जोहन्सी बहुत बीमार हो गई. वह बिस्तर पर निढाल लेटी रहती और खिड़की के शीशों से सामने वाले घर की खाली दीवार को ताकती रहती.

उसके स्वस्थ होने की अधिक संभावना नहीं है. उस ने अपने मन में यह बात बैठा ली है कि अब वह ठीक नहीं हो सकती. क्या ऐसा कुछ नहीं है जिसके लिए वह जीना चाहे?

वह नैप्लस की खाड़ी का एक चित्र बनाना चाहती थी.

चित्रकला? वह महत्वपूर्ण नहीं है. क्या कुछ ऐसा नहीं है जिसके विषय में वह थोड़ा सोचे-जैसे कि कोई पुरुष?

नहीं डॉक्टर, ऐसा कुछ भी नहीं है.

तो यह एक समस्या है. लेकिन अगर सर्दियों के किसी नये फैशन या फिर ऐसी ही किसी रुचिकर चीज़ के बारे में तुम उससे बातें कर सको तो उसके ठीक होने की संभावना बढ़ जायेगी, ऐसा मेरा विश्वास है.

उसने बैठ कर चित्र बनाने की तैयारी की और एक मैगज़ीन के लिए चित्र बनाने लगी.

खिड़की की ओर चेहरा किये, जोहन्सी बिस्तर में लेटी थी और ज़रा भी हिलडुल न रही थी. उसे लगा जोहन्सी सो रही थी, उसने सीटी बजाना बंद कर दिया.

डॉक्टर के जाने के बाद सू स्टूडियो में गई और बैठ कर रोने लगी.

फिर चित्रकारी का सामान और ड्राइंग बोर्ड ले कर वह जोहन्सी के कमरे में आई. वह सीटी बजा रही थी.

फिर उसे जोहन्सी की धीमी आवाज़ सुनाई दी.

Twelve.

जोहन्सी की आँखें पुरी तरह खुली हुई थीं और खिड़की के बाहर देखते हुए वह उलटी गिनती गिन रही थी.

सू ने खिड़की के बाहर देखा. वहां क्या था गिनने वाला?
आठ.... सात....
एक पुरानी बेल सामने की दीवार पर चिपकी हुई थी. पतझड़ की ठंडी हवा में उसके सारे पत्ते लगभग गिर चुके थे.
क्या बात है, प्रिय?
छह. अब वह और जल्दी गिर रहे हैं!
छह क्या, प्रिय?
उस बेल के पत्ते. जब उसका अंतिम पत्ता भी गिर जायेगा तब मैं भी चल दूंगी.
क्या बेतुकी बात करती हो? तुम्हारे स्वस्थ होने में उस बेल का क्या लेना-देना है? चलो सू को अपनी चित्रकारी करने दो ताकि वह चित्र बना कर बेच सके. फिर वह तुम्हारे लिए वाइन ले कर आएगी और अपने लिए पोर्क चोप्स!
तुम्हें और वाइन खरीदने की कोई आवश्यकता नहीं है. मैं बस अंतिम पत्ते को गिरते देखना चाहती हूँ, फिर मैं भी चली जाऊँगी.
जोहन्सी, प्लीज़ मुझे वचन दो कि तुम अपनी आँखें बंद रखोगी और, जब तक मैं काम पूरा नहीं कर लेती, तुम खिड़की के बाहर न देखोगी.
जब तुम्हारा काम खत्म हो जाये तो मुझे बता देना क्योंकि मैं अंतिम पत्ते को गिरते देखना चाहती हूँ.
मैं प्रतीक्षा करते-करते थक चुकी हूँ. मैं हर चीज़ पर अपनी पकड़ ढीली कर देना चाहती हैं और उन सूखे पत्तों समान गिर जाना चाहती हूँ.

सोने की कोशिश करो. बूढ़े खनिक का मॉडल बनाने हेतु मैं बेहमन को बुलाने जा रही हूँ.

बेहमन एक बूढ़ा कलाकार था जो निचली मंज़िल में रहता था. वह सदा से एक महान चित्र बनाने वाला था, लेकिन वह चित्र बनाना उसने कभी आरम्भ ही नहीं किया.

मैंने आज तक ऐसी बात नहीं सुनी! उसके मन में ऐसी बात तुम ने आने क्यों दी? नहीं! मैं तुम्हारा मॉडल नहीं बनूंगा! बेचारी मिस जोहन्सी.

वह बहुत बीमार और कमज़ोर है. बुखार के कारण उसका मन अजीब विचारों से भर गया है.

बेहमन बहुत शराब पीता था, लेकिन ऊपर स्टूडियो में रहने वाली दोनों लड़कियों के साथ पिता समान व्यवहार करता था.

जोहन्सी ने जो उसे कहा था वह सू ने बेहमन को बताया. उसने कहा कि उसे भी भय लग रहा था कि जोहन्सी सच में एक सूखे पत्ते समान गिर कर मर जायेगी. जीवन पर उसकी पकड़ और कमज़ोर नहीं होनी चाहिए.

लेकिन जहां तक आपकी बात है- अगर आप मेरा मॉडल नहीं बनना चाहते तो कोई बात नहीं.

तुम भी आम औरतों जैसी हो! किस ने कहा कि मैं मॉडल नहीं बनना चाहता. आधे घंटे से मैं तुम्हें बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि मैं तैयार हूँ.

यह जगह मिस जोहन्सी के बीमार पड़ने के लिए नहीं है. एक दिन मैं एक महान कलाकृति बनाऊंगा और हम सब यहाँ से चले जायेंगे.

जब वह ऊपर पहुंचे तब जोहन्सी सो रही थी.

डरते हुए उन्होंने खिड़की से बाहर देखा. सिर्फ एक पत्ता बचा था.

बिना कुछ कहे उन्होंने एक पल एक दूसरे को देखा.

सू ने चुपचाप पर्दा नीचे कर दिया. बेहमन एक बूढ़े खनिक का भेष बनाकर, पत्थर की जगह, एक केतली पर बैठ गया.

अगली सुबह सू ने देखा कि जोहन्सी जाग रही थी और परदे को ताक रही थी.

सू ने उसका कहा माना.

बीमार लड़की ने कमज़ोर आवाज़ में अपनी मित्र से कहा.

पर्दा ऊपर कर दो.
मैं देखना चाहती हूँ.

लेकिन, अरे! पिछली रात की तेज़ बारिश और आंधी के बाद भी बेल पर एक पत्ता था. डंडी के पास हरा लेकिन किनारों पर पीला, वह पत्ता बहादुरी से दीवार के साथ चिपका हुआ था.

यह अंतिम पत्ता है. मुझे लगा था कि रात में यह गिर गया होगा. मैंने आंधी की आवाज़ सुनी थी.

आज यह अवश्य गिर जायेगा और मैं भी उसी पल मर जाऊँगी.

दिन बीत गया. संध्या के प्रकाश में भी अंतिम पत्ता दीवार के साथ चिपका दिखाई दे रहा था.

रात होते ही उत्तर की तेज़ हवा चलने लगी. खिड़की पर बरसती बारिश की बूंदों की आवाज़ वह सुन पा रही थीं.

मेरी प्रिय मित्र, अगर तुम अपने बारे में नहीं सोच सकतीं तो कम से कम मेरे बारे में सोचो. मैं क्या करूंगी?

पर जोहन्सी ने कोई उत्तर नहीं दिया. दुनिया में सबसे दुखद चीज़ वो आत्मा होती है जो मरने को तैयार होती है.

सुबह हुई तो जोहन्सी ने फिर खिड़की से पर्दा हटाने के लिए कहा.

बेल पर पत्ता अभी भी लगा था.

जोहन्सी उसे देखते हुए देर तक लेटी रही. आखिरकार उसने कहा.

सू, मैंने बुरा व्यवहार किया. यह समझाने के लिए कि मैं कितनी बुरी थी, किसी शक्ति ने उस पत्ते को बेल के साथ जोड़े रखा.

मरने की इच्छा करना पाप है. तुम मेरे लिए थोड़ा शोरबा ले आओ और वाइन मिला कर थोड़ा-सा दूध भी.

दुपहर में डॉक्टर आया और जैसे वह जाने लगा, सू बहाना बना कर कमरे से बाहर आ गई.

अब उसके ठीक होने की बहुत उम्मीद है. अच्छी देखभाल से वह जल्दी ही स्वस्थ हो जायेगी. अब नीचे जाकर मुझे एक और मरीज़ को देखना है. उसका नाम बेह्मन है. वह भी कोई कलाकार है, शायद.

एक घंटे के बाद उसने कहा.

सू, किसी सुंदर जगह जा कर मैं एक दिन चित्रकारी करूंगी. मुझे आशा है कि एक दिन मैं नैप्लस की खाड़ी में चित्र बनाऊँगी.

उसे भी निमोनिया हुआ है. लेकिन वह एक कमज़ोर, वृद्ध आदमी है और उसके बचने की आशा नहीं है. दुपहर में उसे अस्पताल ले जायेंगे.

अगली सुबह....

अब वह संकट से बाहर है तुम जीत गई. अब ठीक से भोजन और देखभाल, बस और कुछ नहीं.

दुपहर में सू वहां आई जहां जोह्न्सी लेटी हुई थी.

मिस्टर बेह्मन निमोनिया के कारण अस्पताल में आज चल बसे. वह दो दिनों से बीमार थे.

क्या तुम ने नहीं सोचा कि इतनी तेज़ हवा के बावजूद वह गिरा क्यों नहीं?

द्वारपाल ने एक सुबह उन्हें बड़ी तकलीफ में पाया था. उनके कपड़े और जूते भीगे हुए और बर्फ समान ठंडे थे. किसी को समझ न आया कि ऐसी रात में वह कहाँ गये थे.

फिर बाहर उन्हें एक सीढ़ी, कुछ ब्रुश और हरा और पीला रंग मिला.

यह पत्ता बेह्मन की उत्कृष्ट कलाकृति है. जिस रात अंतिम पत्ता गिर गया था उसी रात उन्होंने इसे बनाया था.